साथ ही वह विरजा को भी मुँहबोली बहन की तरह प्यार करती है। सीता में यह क्षमता है कि आजन्म कुमारिका विरजा की कितनी पहुँच है- वह समझ सके। इसलिए जब विरजा गंध फली नामक आश्रम-पालिता मृगी को मृग के प्रेम में उतावली देखती है तो उसे ताने देती है कि वह पुरुष की सत्य पहचान रखे। ऐसा न हो कि उसका प्रियतम मृग कंचनमृग की तरह छली हो।

वस्तुत: सीता के परित्यक्तारूप को देख वह पुरुषों के प्रति कठोर हो गई थी। वह पुरुष को घाट-घाट का पानी पीनेवाला, अपने हृदय में वासना-सर्पिणी को पालने वाला, रूप की भीख माँगनेवाला, बहेलियों की तरह नारी पक्षी की हत्या करने वाला तथा अपने कर्म-यज्ञ के हवन कुंड में समिधा बनाकर नारी को डाल देने वाला अत्याचारी मानती है। सीता इसका प्रतिवाद करती है और गंधफली को उसके प्रियतम के पास जाने के लिए मुक्त कर देती है। सीता ने कहा कि विरजा तूने पूर्ण पुरुष का मूल्य सही रूप में नहीं आँका है। पूर्णचंद्र के बिना चांदनी जिस तरह नहीं निखरती वैसे ही पूर्ण पुरुष के बिना नारी नहीं खिलती। वह कहती है कि आजन्म कुमारिका होने के कारण विरजा को इसका अनुभव नहीं है। वह बताती है कि पुरुष की पुकार प्राणों के आर-पार हो जाती है। नारी के एकांत बंद सुनसान शांत घर की किवाड़ अचानक खुल जाती है और उसमें रश्मि का ज्वार उफनने लगता है। वह कहती है——

आकाश पुरुष नारी धरती
जब पुरुष स्नेह बरसाता है
तब नारी के जीवन के मधुवन में -
वसंत आ न पाता है।—

तात्पर्य यह है कि सीता नारी-पुरुष के शाश्वत आकर्षण से परिचित है, किन्तु वह ऐसी नारी नहीं है जो किसी भी पुरुष की पुकार पर अपने को न्योछावर कर दे। यही कारण है कि वह एक विशिष्ट नारी का भी परिचय देती है —

या एक बावली भी जिसको -
विश्वास अटल स्वाती घन का
घटती न लगन मिटती न रटन
घन है बरखा या देकर का।

फिर यह बताती है कि वह स्वयं ऐसी ही नारी है—

मैं वही चातकी उसी पाँत की
एक बावली हूँ बिरजा
चातकी भला क्या जाने क्यों
वैसी उसको विधि ने लिखा

सीता का राम के प्रति अटूट प्रेम है। ऐसा प्रेम जो प्रतिदान भी नहीं माँगता। बिरजा जब कहती है कि पुरुष की शिकायत उसने इसलिए की कि अश्व मेध में श्री रामचन्द्र उसकी जैसी ही कंचन की सीता बनवा चुके हैं - यह तो शीश काटकर बाल बचाने जैसा कृत्य है, तब नारी की महत्ता के संबन्ध में सीता कहती है -

कमनीय कुसुम बनना
देवता चरण पर चढ़ना है सुखकर

पर फल देकर प्रसाद बन
बँट जाना उससे भी बढ़कर।

सीता स्पष्ट कहती है कि उसे राम से कोई शिकायत नहीं है क्योंकि—

जिसने जीवन में गौरवमय
मातृत्व बो दिया है
उसे माँगना या कि पाना
रह गया कहाँ कुछ भी बाकी
वह वंदनीय, आलोच्य नहीं—
मैं सत्य कह रही—तुम साखी।

सीता को गीतों से भी बहुत प्यार है, इसीलिए वह विरजा को तो गाने को कहती है, खुद भी आवश्यकता पड़ने पर गाती है।

यह सीता चित्रकला में भी दक्ष है। वरुण के यहाँ से रामायण-गान सुनाकर लौटने वाले लव-कुश को सीता ने अपने बनाये चित्रों को दिखाया, जिन्हें देख लव-कुश को रामायण से कम महान् यह चित्र कृति नहीं लगी। सीता अपने मातृत्व-स्नेह का पशु-पादपों तक विस्तार कर सबसे विलक्षण और महान् बन गई है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
बक्सर-(बिहार)